ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 267-269

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

समकालीन भारतीय चित्रकला में अर्द्धअमूर्तन का महत्व

1. सन्तोष कुमार
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येता, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-05.12.2023, Revised-11.12.2023, Accepted-16.12.2023 E-mail: santoshmfa3@gmail.com

सारांशः ***आज के समकालीन कलाकार केवल अमूर्त चित्र शैली को ही वास्तविक कला समझते है। भारतीय समकालीन कला जगत में मूर्त (रियलेस्टिक), अर्द्धअमूर्त (सेमीरिलेस्टिक) व अमूर्त (एब्स्ट्रेक्ट) कृतियों का सृजन मनः स्थितिओं के अनुसार कर रहा हैं तथा वर्तमान समय के कलाकारों ने अभिव्यंजनावादी (एक्सप्रेसनिज्म) अभियान से प्रेरणा लेकर बिना किसी पूर्व विचार के चित्र निरूपित करना अपना लक्ष्य निर्धारित किया व निरन्तर कलाकारों की कृतियां साकार से निराकार होती चली गई और निराकार होकर एकदम अन्तर्ध्यान हो गई है। अर्थात् मूर्त व अमूर्त के बीच का संकरण करते या संवाद करते अनुभूत होते हैं जिसे अर्द्ध –अमूर्तन कला कहते है। दूसरी तरफ आकृति जो मूर्त व अमूर्त के बीच की कड़ी को जोड़ती हैं , उसे अर्द्धअमूर्तन चित्र कहते है। इंग्लैण्ड के कला इतिहासकार सर हरबर्ट रीड ने ठीक ही कहा है कि "आज कला अपनी तीस हजार वर्षों की परिक्रमा करती हुई फिर उसी कंदरा में लौट आई है जहां से वह चली थी। आखिर दुनिया गोल है तो फिर इसमें क्या आश्चर्य, अगर कला अपने घर वापस लौट आई है।" अर्थात् कला सूक्ष्म से स्थूल और स्थूल से उदात्त फिर उसी क्रम में सूक्ष्म की ओर पहुंच गयी। इसी विचारधारा को और स्पष्ट रूप कैंडिस्की ने दिया, उनका विचार था कि ' जो कलाकार अपनी कृतियों में स्थूल जगत से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं रखते वे अधिक प्रभावशाली होते हैं।' अर्थात् नॉन फिगरेटिव और नॉन ऑब्जेक्टिव आर्ट इसी भावना से मूलतः उत्प्रेरित है। इसी क्रम मे उत्तर प्रभाववादी कलाकार गोग्गा ने कहा "कला अमूर्तन है और मैं सही मायानो में आदिम हूं।" कलाकार ने कला का कोई वास्तविक रूप नकार दिया।***

कुंजीभूत शब्द– समकालीन कलाकार, वास्तविक कला, अभिव्यंजनावादी, निराकार, अन्तर्ध्यान, संकरण, अर्द्धअमूर्तन, प्रभाववादी।

पहली बार अर्द्ध अमूर्तन शब्द का प्रयोग भारतीय कलाकार गगनेन्द्रनाथ टैगोर के घनवादी कृति के लिए किया गया। वह कृतियां इस प्रकार हैं 'स्थापत्य कला', 'मकान की भीतरी भाग' व 'रात्रि में शहर' नामक चित्रों के लिए प्रयोग किया गया। इसके अलावा दिल्ली के प्रसिद्ध कलाकार रामकुमार की कला में सन् 1970 ई० में पश्चात् चित्रों में अर्द्धअमूर्तता प्रदर्शित किया क्योंकि फर्नालेजे ने क्यूबिक शैली में उस्ताद थे, अतः आपने घनवादी कला को मूर्तिकार धनराज भगत से लिए, भारत में अर्द्धमूर्तता की शुरुआत रामकुमार ने अमूर्त प्रकृति दृश्यों से की। इस क्रम में आधुनिक अमूर्त, अर्द्धमूर्तन वह विकृति कारण के कलाकार गगनेंद्रनाथ टैगोर ने भी आधुनिक अमूर्त चित्रकला की ओर उन्मुख हुए। इसी क्रम में अर्द्धअमूर्तन कला 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 21वीं शताब्दी मे निर्मित होती रही। पहले जिस कला के लिए आधुनिक शब्द का प्रयोग किया जाता था, लेकिन अब उस कला के संदर्भ में समकालीन शब्द का प्रयोग किया जाता है। समकालीन कलाकार एक ही समय में समय के साथ या समय के साथ चलते हुए कला का विकसित रूप है। समकालीन कला आज की कला है, अर्थात् वर्तमान समय की कला। समकालीन कला का तात्पर्य उस कला से है जो वर्तमान में एक विशेष आंदोलन से जुड़ा है और प्राचीन परंपराओं से हटकर निरंतर नई–नई तकनीक का प्रयोग भी होता रहा है। विगत कुछ वर्षों से कला समीक्षकों द्वारा समकालीन कला के अर्थों को तरह–तरह से परिभाषित करने का प्रयास किए हैं– कोई अमूर्त कला को समकालीन, तो कोई नवीन प्रयोग को और कुछ अरुपवाद को समकालीन मानते हैं। सभी के लिए समकालीन कला का अर्थ भिन्न–भिन्न है, किंतु सही समकालीन कला का जो सही अर्थ है, वह है–समय के साथ–साथ। समकालीन कला में विषय और माध्यम की सीमाओं का बन्धिस नही रहती है। इसमें कलाकार को अधिक व्यक्तिगत और स्वतंत्रता मिलती है और समकालीन कला का रसास्वादन के लिए समकालीन कला का ज्ञान होना अति आवश्यक है। अमूर्त शैली का पूर्ण रूप भारतीय आधुनिक अमूर्तकला के प्रणेता व गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर की कलाकृतियों में देखने को मिलती है। जहां भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए अमूर्त अभिव्यजनवाद चित्रकला को बैसाखी के रूप में प्रयोग किया।

उत्तर प्रभाववादी कलाकार पाल सेजान का कहना था कि "मैं प्रकृति की अनुकृति नहीं करना चाहता । मैं उसे फिर से ढालना चाहता हूं । मैं नई कला का आदिम हूं। कला प्राकृतिक के समानांतर सामंजस्य है, मेरे लिए रंग रूप है।" कला अब केवल सतह तक सीमित नहीं रही। वह चेतन एवं अर्धचेतन धरातल तक प्रवेश कर चुकी हैय अतः मनोवैज्ञानिक तथ्यों को आज के हालातों को दृष्टिगत देखते हुए आज कला को समझने की आवश्यकता है। कैंडिस्की ने कला के भावी स्वरूप पर कहा था कि " भविष्य की कला दो परस्पर विरोधी ध्रुव में घूमेगी, अधिक अमूर्तन और अधिक यथार्थ। तथा आधुनिक कला तभी पैदा होती है, जब चिन्ह प्रतीक बन जाते हैं।" जितना ही ज्यादा संसार भयावह होता जाता है, उतनी ही ज्यादा कला अमूर्त होती है और जब संसार में शांति होती है– तब यथार्थवादी कला पनपती है।

कला सदैव वही उस गति विधि का नाम रहा हैं जो निरंतर परिवर्तनशील रही। आज यदि अमूर्त कला ने मूर्त कला को निकाल कर बाहर किया है तो यह कला के परिवर्तनशील स्वरूप के साथ पूर्णतया तर्कसंगत है। कला अपने युग का दर्पण सदा रही है, आज भी है और हमेशा रहेगी भी। इसी प्रकार भारत के विभिन्न प्रदेशों में समकालीन कला को आगे बढ़ने हेतु कला संगठनों द्वारा समय–समय पर समकालीन कला को नई दिशा व दसा पर बल दिया। जिसमें प्रमुख रूप से विभिन्न कला समूह का नाम निम्नवत् है। कलकत्ता ग्रुप, बॉम्बे ग्रुप, पैग ग्रुप, दिल्ली शिल्पी चक्र, ग्रुप –1890, चोलमण्डल आदि ने समकालीन कला के अंग थे। इन सभी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

समूह के विश्व प्रसिद्ध चित्रकारों की श्रेणी में तैयब मेहता, के०के० हैब्बर, जी०आर०संतोष, के०एस० कुलकर्णी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गणेश पाइन, अर्पिता सिंह, जतिन दास, नलिनी मालानी, गोगी पाल सरोज के साथ ही साथ उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध अर्द्ध–अमूर्तन कलाकारों का जिक्र किया जाए, तो उनमें प्रमुख रूप से शिवनाथ राम, मृदुला सिन्हा, संजीव किशोर गौतम, एस०प्रणाम सिंह, रामशब्द सिंह, अवधेश मिश्र इत्यादि कलाकारों ने समकालीन कला के क्षेत्र में योगदान दिये हैं।

1– तैयब मेहता (1925–2009) गुजरात के प्रसिद्ध कलाकार अपने चित्रों में मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए अभिव्यंजनावादी शैली में चित्रण किया। जो अभिव्यंजनावादी कलाकार फ्रांसिस बेकन से प्रभावित थे। चित्र विकर्ण ६ डाइगनल सीरीज (1970), शांतिनिकेतन त्रिफलक, 1986 (कैनवस तेल रंग), काली, महिषासुर मर्दिनी,ब्लू फिगर, रिक्शा पुलर, गिरते हुए शरीर, संथालों का बसंत–उत्सव आदि। प्रस्तुत चित्र श्रृंखला 'जश्न'(चित्र सं०1) में ज्यामितिय, कर्णवत रेखाओं द्वारा आकृतियों में एक्रेलिक चटक वर्णों से निरुपित किये हैं। चित्र की पृष्टभूमि ज्यामितिय रूप में सपाट हल्की व गहरी रंगों को आरोपित किये हैं। चित्र में आकृतियां न तो यथार्थ हैं और न ही अमूर्त, बल्कि दोनों के बीच की स्थिति है जिसे अर्द्ध–अमूर्त चित्र की संज्ञा देना उचित हैं। चित्र की पृष्टभूमि ज्यामितिय रूप में सपाट हल्की व गहरी रंगों को आरोपित किये हैं। चित्र में आकृतियां न तो यथार्थ हैं और न ही अमूर्त, बल्कि दोनों की बीच की स्थिति है जिसे अर्द्ध–अमूर्त चित्र की संज्ञा देना उचित हैं।

2– के०एस०कुलकर्णी (1916–1994 ई०) भित्ति चित्रकार, मूर्तिकार, छाया चित्रकार एवं शिक्षक रहे। भारतीय शास्त्रीय भाव को समकालीन जनजीवन तथा सामाजिक वातावरण से विश्लेषण कर यथार्थ व अमूर्त कला के संबंध प्रयोग से एक नवीन शैली की संरचना की। जिसमें रंग पट्टीकाओं तथा आकृतियां टेढ़ी–मेढ़ी व बिरूपित होते हुए भी स्वतंत्र रेखाओं, उत्तेजक रंगो तथा लयात्मकता से परिपूर्ण जीवंत है। साथ ही साथ आप दिल्ली शिल्पी चक्र के संस्थापक सदस्य रहे और त्रिवेणी कला संगम की स्थापना भी किये थे। आप ललित कला संकाय, बी.एच.यू. वाराणसी के संकाय प्रमुख भी थे। आप की प्रसिद्ध चित्र 'किसान' (चित्र सं० 2)के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ज्यामितिय रूपों में बैलों व आदमी, धुसर मटमैला रंगों का प्रयोग किये। घनवाद का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। चित्र मूर्त–अमूर्त के बीच की कड़ी हैं जिसे अर्द्ध–अमूर्त कहते हैं। घनवाद पद्धति में चटक वर्ण से चित्रण किये हैं।

तैयब मेहता 'जश्न' (सेलिब्रेशन) –1995, माध्यम– कैनवास पर एक्रेलिक रंग, संग्रह – नेशनल गैलरी ऑफ मॉर्डन आर्ट्स, (चित्र–सं०–1)

के.एस.कुलकर्णी : चित्र किसान, बोर्ड पर कागज चिपका कर तैल रंग से अंकन। (चित्र सं० 2)

3– एन.एस. बेंद्रे (1910–1992) आप समकालीन भारतीय चित्रकला के इतिहास में प्रसिद्ध हैं। सन् 1950 ई० के आस –पास संश्लेषणात्मक घनवादी प्रयोग किये, जिनमे आकृतियों को भारतीय शास्त्रीय व सौंदर्यात्मक लयात्मक कथा का प्रभाव दिखाई देता है। आपके चित्रों में मानवीय आकारों, प्रकृति चित्रों व स्टील लाइफ आदि प्रमुख विषय रहे। चित्रों में नव प्रभाववाद धब्बिंदुवाद, अभिव्यंजनावाद, अमूर्त अभिव्यंजनावाद, घनवाद का प्रभाव रहा हैं। इनके प्रसिद्ध चित्र कांटा (चित्र सं० 3) में एक महिला दाहिने पाँव में चुभे कांटे को निकलते हुये और बाए हाँथ में वृक्ष की टहानी लिए चित्रण हुआ हैं। चित्र में ज्यामितिय रूप को

एन0एस0बेंद्रे चित्र कांटा(थार्न)1955 ई०,तैलरंग,कैनवास, रा0आ0क0दीर्घा, नई दिल्ली। (चित्र सं०–3)

4– के. के. हेब्बेर– आप भारतीय चित्रकार एवं शिक्षक के रूप में प्रसिद्ध हुये। आप जैन, मुगल लघुचित्र और अजंता शैली

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

की चित्रकारी व लोक कला से प्रभावित थे। आपके कृतियों में पाल गोंगा व पाल सेजान का प्रभाव स्पष्ट है। प्रसिद्ध कृति : मुर्गे की लड़ाई ध्कॉक फाइट (चित्र सं०–4) (1959, कैनवस तेल रंग चंडीगढ़ म्यूजियम)। मुर्गे की लड़ाई प्रस्तुत कृति में दो मुर्गो को आक्रमक व रौद्र रूप में लड़ते हुए चित्रण हैं पृष्ठ भूमि में जनता को चित्रित किया गया हैं। रंग विधान मटमैले धुसर और लाल रंग का प्रयोग हैं। मुर्गो के पंख अस्थ व्यस्त व जमीन पर टूट कर विखरे पड़े है। दोनों मुर्गो को घायल व रक्त निकलते हुये दिख रहा हैं। जो कुल मिलाकर अर्द्ध –अमूर्तन में चित्रण हुआ हैं।

के. के. हेब्बेर चित्र : मुर्गे की लड़ाई, (तैल रंग, कैनवास, चंडीगढ़ संग्रहालय, चंडीगढ़)(चित्र सं०–4)

5–डॉ० अवधेश मिश्र (1970–अब तक) उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कला इतिहासकार, समीक्षक व कलाकार,कला शिक्षक की श्रेणी में किसी महान व्यक्ति का नाम लिया जाए, प्रसिद्ध कृतियों में बिजूका,(चित्र सं०–5) बिजूका रिटर्न में दो लट्ठे को बांध कर उसमे कपड़ा को पहना देते हैं, हांडी का सिर बनाकर आकृति बना लेते हो उसे फसल की खेत में खड़ा कर देते हैं। जिससे पशु पक्षी फसल न खाएं। यह रूप कैनवास पर एक्रेलिक रंग में चित्रित हुआ हैं। चित्र में सपाट और मर्जयुक्त वर्णों का प्रयोग हुआ हैं। काल्पनिक पक्षी और सफेद सफाट ढ़ोलक । मिस्त्रीत वर्णों का प्रयोग करके सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किये हैं। डॉ0 अवधेश मिश्र ने "अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का सिंहावलोकन" में लिखे हैं" समकालीन कला जड़ता के विरुद्ध एक वैचारिक उद्घोष है। यह अनायास और अचानक नहीं आया हैं, बल्कि इसे समाज और समकालीन के बदलते मूल्यों का संवाहक और दस्तावेज के रूप में देखा जाना चाहिए।"

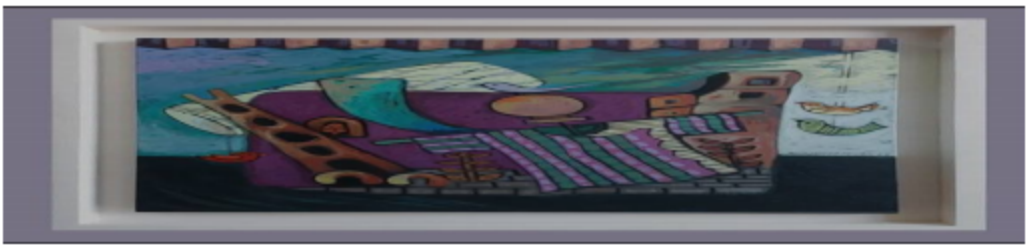

डॉ. अवधेश मिश्र : चित्र बिजुका, कैनवास पर एक्रेलिक रंग, निजी संग्रहलय में संग्रहित (चित्र सं०–5)

इस शोध प्रपत्र के आधार हमें यह स्पष्ट हो रहा है कि आज के समकालीन कलाकार अपने कृतियों में अत्यधिक रूप से नहीं यथार्थवादी शैली में चित्रण बनाते हैं और ना ही अमूर्तवादी शैली में, बल्कि वर्तमान समय के समकालीन/आधुनिक कलाकार मूर्तन व अमूर्तन के बीच अर्ध–अमूर्तन शैली में ज्यादातर कृतियों का निर्माण कर रहे है, जो समकालीन भारतीय कलाकारों की प्रमुख विशेषता रही है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र के माध्यम से नवीन शोध छात्रगण व कला प्रेमी को एक सूक्ष्म अर्द्ध–अमूर्तन शैली के बारे में समझने की कोशिश किया गया है, जो सागर की एक बूंद पानी के बराबर है और आगे निरंतर इस विषय पर शोध करना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रताप, डॉ0 रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी) पांचवा संस्करणः 2009.
2. अग्रवाल, जी0 के0 (अशोक): कला सौंदर्य एवं समीक्षा शास्त्र (संजय पब्लिकेशन आगरा) (प्रथम संस्करण 2008)।
3. चतुर्वेदी, डॉ0 ममता : समकालीन भारतीय कला (सन् 1850 ई0 से वर्तमान तक) (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर)(आठवां संस्करण 2017)।
4. अग्रवाल, डॉ0 गिर्राज किशोर : आधुनिक चित्रकला (ललित कला प्रकाशन अलीगढ़) (सप्तम् संस्करण 2011)।
5. अग्रवाल, डॉ0 गिर्राज किशोर : रूपांकन (रूप चित्रण के तत्व और सिद्धांत) (संजय पब्लिकेशन : शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, किदवाई पार्क, राजा मंडी, आगरा)।
6. वाजपेई, डॉ0 राजेंद्र : मॉडर्न आर्ट (परिष्कृत संस्करण 1980–81) (सम्मिट पब्लिकेशन कानपुर)।
7. भारद्वाज, विनोद : बृहद आधुनिक कला कोश (वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली) (प्रथम संस्करणः 2006)।
8. मांगो, प्राण नाथ : भारत की समकालीन कला : एक परिप्रेक्ष्य (प्रशासन / नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया)।
9. राठौर, डॉ0 यशवंत सिंह : कला त्रैमासिक पत्रिका (ललित कला अकादमी, उत्तर–प्रदेश)(कला के विविध रूपों एवं गतिविधियों का दस्तावेज) (अप्रैल–जून 2018 वर्ष, 43 अंक 40)।
10. जोशी, डॉ0 ज्योतिष : समकालीन कला पत्रिका (ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली) (जून–अक्टूबर 2015 वर्ष, 44 अंक 45)।

*****